जनजाति महिला विकास संस्थान

वार्षिक गतिविधि प्रतिवेदन
(समेकित)

ANNUAL ACTIVITY REPORT
(Consolidated)
(2021 - 2022)

जनजाति महिला विकास संस्थान
अक्रमुः रूचेजनन्त सूर्यम्

बड़ी कहानी ''छोटी'' की

कहानी आज के सत्तर वर्ष पहले की है।
राजस्थान के एक जनजातीय समाज से आने वाला एक अनपढ़ गरीब किसान एक दिन अपनी पाँच वर्ष की नन्ही बेटी का हाथ थाम उसे स्कूल ले गया। सबने कहा ,
"लड़कियाँ भी कहीं पढ़ती है ?"
वह बोला , "यह पढ़ेगी, मैं इसके भाई के साथ इसे भी पढ़ाऊँगा।"
पिता ने हाथ पकड़ा था, कोई रोकता भी कैसे।
स्कूल में जा कर कहा, "इसका दाखिला करवाना है, यह भी पढ़ेगी।"
शिक्षिका ने धूल धूसरित पाँव लिए खड़ी बच्ची और घुटने तक की धोती और एक मटमैले कुर्ते में खड़े अनपढ़ किसान पिता को ऊपर से नीचे तक देखा और बोली, " नाम क्या लिखूँ इसका ?"
पिता बोला, "छोटी"
शिक्षिका कलम नीचे रख कर बोली, "यह कोई नाम है? दूसरा कोई नाम बताओ ।"
अनपढ़ किसान तुरन्त ही क्या नामकरण करता, घर में सबसे छोटी थी तो छोटी ही बुलाते थे सब।
बोला,"जो बगल वाली लड़की का है, वही नाम इसका रख दो।"
सर हिलाते हुए शिक्षिका ने कहा, "फीस दे दो इसकी"
रुपए थे नहीं तो ''छोटी'' को वहीं छोड़ वापस घर गया और कंधे पर एक बोरी अनाज लाद लाया।
शिक्षिका के टेबल के पास गेहूं की बोरी पटक कर बोला, "यही है मेरे पास। हर साल जब पैदा होगी खेतों में तब दे जाऊँगा मास्टरनी जी, बस इसे भी पढ़ा दो। ससुराल जाएगी तब चिट्ठी–पत्री लिख दिया करेगी।"

छोटी को नया नाम मिल गया था –"जसकौर"

"छोटी" की यह यात्रा एक इतिहास बनी जब वे इस एक बोरी अनाज की फीस के बल पर मीना जनजातीय समाज की,
पहली दसवीं पास बालिका,
पहली **स्नातक**,
पहली **स्नातकोत्तर**,
पहली **राजकीय शिक्षिका**,
पहली **प्रधानाध्यापिका**,
पहली **परियोजना अधिकारी**
पहली **उपनिदेशक महिला शिक्षा** और
राजस्थान के जनजातीय मीना समाज से आने वाली पहली महिला **लोकसभा सांसद**
एवं इसके पश्चात भारत सरकार में **''महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री''** बनीं।

यह कहानी है "श्रीमती जसकौर मीना" की।
जनजातीय समाज से आने वाली वे **पहली महिला हैं जिन्होंने अपने समाज की बालिकाओं और महिलाओं को शिक्षित करने के लिए जीवन समर्पित किया।**

"अनाज के बदले शिक्षा" का यह मूल मंत्र जो उनके पिता ने चरितार्थ कर दिखाया था वही मूलमंत्र उनके द्वारा स्थापित **जनजाति महिला विकास संस्थान** की नींव का पत्थर साबित हुआ जिसके आधार पर ग्राम मैनपुरा एवं उसके आसपास के कई गाँवो ने अनाज, रेत, पत्थर और यदि कुछ और संभव ना भी हो पाया तो अपना श्रमदान दे कर जसकौर जी के प्रति पूर्ण विश्वास व्यक्त करते हुए सम्मिलित सहयोग से संस्थान के अन्तर्गत वर्ष 1995 में **"ग्रामीण महिला विद्यापीठ"** की स्थापना की।
आस–पास का हर किसान अपनी बेटी का हाथ थाम उसे ज्ञानार्थ प्रवेश दिलाने यहीं लाता है ताकि वह भी **"छोटी से जसकौर"** तक का सफर कर देश व समाज की सेवार्थ यहाँ से प्रस्थान करे।
शिक्षा का प्रकाश अन्धकार में भी मार्गदर्शित करता है, कभी क्षीण नहीं होता।
शिक्षा के द्वारा सशक्तिकरण और उन्नति की राह पर आगे बढ़ना सभी बालिकाओं का अधिकार है जिसकी प्राप्ति के लिये बालिकाओं का मार्ग प्रशस्त करना हम सभी का उत्तरदायित्व है।
यही जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है।

निदेशक की कलम से...

प्रिय अभिभावक गण, मित्रगण, शुभचिंतक बंधु एवं हमारे देश का भविष्य हमारे विद्यार्थीगण।

1995 में हमारी संस्थापिका परम् आदरणीय माँ श्रीमती जसकौर मीणा जी के अथक प्रयासों से, मात्र 5 बालिकाओं के साथ मंदिर के प्रांगण में प्रारंभ हुआ हमारा ग्रामीण महिला विद्यापीठ आज अपने 25 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है।

5 बालिकाओं व दो शिक्षिकाओं के साथ प्रारंभ हुई यह यात्रा आज पांच संस्थाओं के साथ शिक्षा के विभिन्न सोपानों को पार करती हुई, आपके सहयोग से क्षेत्र में बालिका शिक्षा के प्रचार–प्रसार द्वारा बालिकाओं को भविष्य में श्रेष्ठतम अवसर प्रदान करने के लिए वचनबद्ध है।

विगत 25 वर्षों की यात्रा अभी लक्ष्य पर पहुंच गई हो, ऐसा नहीं है। दिन प्रतिदिन हम स्वयं को परखते हैं, नित नवीन उत्साह के साथ हम आगे की यात्रा की तैयारी करते हैं। हम नए विचार, नवाचार सीखते हैं ताकि अपनी संस्था में प्रवेश लेने वाली हर बालिका को नई ऊंचाइयां छूने के लिए प्रेरित कर सकें, उसे नित नवीन सिखा सकें। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों का पालन करते हुए हमारी बालिकाएं अपनी सोच को विश्वव्यापी बना सकें, उनकी वैचारिक शक्ति को धार लग सके, यही हमारा उद्देश्य है और यही संभवतः शिक्षा का मूलभूत अर्थ भी है। ज्ञान तब फलीभूत होता है जब वह ज्ञान पर्याप्त करने वाले में विश्लेषणात्मक शक्ति पैदा कर सके। सद् विचार, सद् मूल्यों पर आधारित सोच के साथ सकारात्मक विश्लेषण विश्व में आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है और यह शक्ति उत्पन्न करने का सबसे महत्त्वपूर्ण स्रोत स्कूल शिक्षा ही है।

हमारी बालिकाओं ने संस्था से शिक्षा ग्रहण कर विभिन्न पदों को सुशोभित किया है। अनेकानेक बार संस्था और अपने शिक्षकों को गौरवान्वित किया है। शिक्षा उन पंखों की भांति है जो उड़ान की क्षमता प्रदान करते हैं। ग्रामीण महिला विद्यापीठ का परिसर प्रत्येक बालिका के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करता है ताकि वह भविष्य में अपनी उड़ान को सुनिश्चित कर सके।

प्रकृति की गोद में बसे विद्यापीठ प्रांगण में, हर प्रकार के प्रदूषण से दूर वातावरण स्वाभाविक रूप से शिक्षा के अनुकूल है। सांस्कृतिक व रचनात्मक गतिविधियों द्वारा बालिकाएं उनके भीतर छिपे गुणों व प्रतिभाओं के प्रति जागरूक बनती हैं। कार्यों को कैसे एक दूसरे से सहयोग लेकर व देकर उत्कृष्ट ढंग से निष्पादित किया जाता है इसका अभ्यास उन्हें एक साथ, एक जैसे वातावरण में, एक जैसी दिनचर्या का निर्वहन करके प्राप्त होता है। खेलकूद, प्रातः–संध्या वंदन, एक साथ परिवार की तरह बैठकर शुद्ध सात्विक भोजन छात्रावास की विशेषताएं हैं। साहित्य चर्चाओं, संगोष्ठियों, वाद–विवाद प्रतियोगिताओं के साथ रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बालिकाओं की सतत भागीदारी रहती है।

प्रांगण में होने वाली इन सभी गतिविधियों के साथ–साथ टेक्नोलॉजी के उपयोग का ज्ञान उन्हें करवाने को लेकर हमारी सोच पूर्ण रूप से आधुनिक है। कंप्यूटर की शिक्षा आने वाले समय में प्रत्येक बालिका के लिए अनिवार्य करना हमारी प्राथमिकताओं में से एक है। वर्तमान समय ने एक नया मोड़ लिया है, इसमें हमारा संकल्प भी "आपदा में अवसर" ढूंढने पर ही आधारित है। कोविड महामारी के इस अत्यंत चुनौतीपूर्ण समय में गरीब एवं पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों से आ कर संस्थान में अध्ययनरत छात्राओं को संसाधनों की कमी के चलते पढ़ाई में व्यवधान का सामना करना पड़ा। कई बालिकाओं ने अपने माता –पिता में से किसी एक को या अपने किसी स्वजन को खो दिया। ऐसे में उनके मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए उनका मनोबल बनाए रखना एक बड़ी चुनौती रही।

संस्था इस वर्ष विशेष धन्यवाद ज्ञापित करती है उन सभी सम्माननीय शिक्षकगणों को जिन्होंने अपनी निजी समस्याओं एवं तकलीफों को शैक्षणिक प्रक्रियाओं पर इस कोविड काल में कभी हावी होने नहीं दिया और यथा संभव सहयोग किया।

संस्था स्थानीय ग्रामवासियों, मैनपुरा सरपंच, सूरवाल थाना पुलिस एवं समस्त अभिभावक गणों का सहयोग के लिए हृदय से आभार प्रेषित करती है।

बालिकाओं की सुरक्षा हमारी सबसे अहम प्राथमिकता है। अभिभावकों से निरंतर संपर्क हम बनाए रखते हैं और साथ ही भारत का भविष्य इन बालिकाओं के शिक्षण, पोषण व संवर्धन में अभिभावकों के मार्गदर्शन एवं सहयोग की निरंतर अपेक्षा रखते हैं।

आइए साथ मिलकर नवभारत का निर्माण करें। एक ऐसा भारत जिसकी बालिका की सबसे बड़ी ताकत उसका बुद्धि बल हो, उसकी शिक्षा हो। वह मां सरस्वती, मां दुर्गा एवं मां लक्ष्मी का सम्मिलित अवतार हो। वह स्वयं में परिपूर्ण हो। वह स्वयं का सम्मान करना सीखे और हम सबका अभिमान बन सके।

आपके सहयोग व शुभकामनाओं की अपेक्षा में

रचना मीना
निदेशक,
ग्रामीण महिला विद्यापीठ मैनपुरा
सवाई माधोपुर

संस्था का नाम	**जनजाति महिला विकास संस्थान**
पता	**ग्राम – मैनपुरा, सवाई माधोपुर–322027 (राजस्थान)**
रजि. क्रमांक	**56/स.मा./1993–94**
लोगो	
ध्येय वाक्य	**''अक्रमु रुचेजनन्त सूर्यम'' (अपने सूर्य आप बन जाओ)** – शिक्षा का प्रकाश ही ग्रामीण क्षेत्र की, जनजातीय समाज से आने वाली बालिकाओं के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है ऐसा हमारा विश्वास है। क्यों की विद्या ही वह पूँजी है जिसे बालिकाओं की उस धरोहर के रूप में दिया जा सकता है जिसे उनसे कोई ना छीन सकता है ना बाँट सकता है। **न चौरहार्यं न च राजहार्य, न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।** **व्यये कृते वर्द्धत एव नित्यं, विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्।।** यही वह प्रकाश है जो कभी क्षीण नहीं होता। **"शिक्षा का सूर्य कभी अस्त नहीं होता"**
प्रमुख उद्देश्य	ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं के लिए शिक्षा सुलभ करवाना और यह सुनिश्चित करने का प्रयास करना कि कोई भी बालिका किसी आर्थिक अभाव या विपरीत परिस्थितियों के चलते अपनी स्कूल शिक्षा बीच में ना छोड़े। बालिका के शिक्षित होने से ही भविष्य में जनजातीय समाज का सर्वांगीण विकास संभव है। "सशक्त नारी, सशक्त भारत" नारे की सफलता "शिक्षित बालिका" के मूल मंत्र में छिपी हुई है। एक शिक्षित और जागरूक बालिका ही भविष्य में सशक्त और स्वावलंबी नारी बन सकती है। जनजाति महिला विकास संस्थान की स्थापना के पीछे यही उद्देश्य निहित है और जनजाति महिला विकास संस्थान इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिये निरंतर प्रयासरत रहेगा। बालिकाओं की शिक्षा, स्वास्थ्य, सशक्तिकरण एवं स्वावलंबन ही जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है।
परिचय एवं पृष्ठभूमि	• **राजस्थान के सवाईमाधोपुर** जिले के छोटे से गाँव **मैनपुरा** स्थित मंदिर के प्रांगण में मात्र पाँच बच्चियों से प्रारंभ हुआ **जनजाति महिला विकास संस्थान** द्वारा स्थापित स्कूल **"ग्रामीण महिला विद्यापीठ"** स्वयं राजस्थान के ग्रामीण किसान और जनजातीय पृष्ठभूमि से आने वाली हमारी संस्थापिका श्रीमती जसकौर मीना द्वारा **वर्ष 1993** में स्थापित किया गया, जो जनजातीय समाज की **पहली शिक्षित महिला** थीं। उसी शिक्षा के बल पर वे अपने समाज से सरकारी सेवा में आने वाली पहली शिक्षिका बनीं और निरंतर आगे बढ़ते हुए आगे चल कर लोकसभा सांसद बन संपूर्ण राजस्थान क्षेत्र से प्रथम महिला केंद्रीय मंत्री के पद तक पहुँची और महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का कार्यभार सम्भाला।

परिचय एवं पृष्ठभूमि	• जनजातीय समाज से आने वाली बालिकाओं के जीवन में शिक्षा से सकारात्मक परिवर्तन लाने में विद्यापीठ ने जो महत्वपूर्ण भूमिका विगत 27 वर्षों से निभाई वह उन्हीं की दूरगामी सोच का परिणाम है। • इस क्षेत्र में बालिकाओं की शिक्षा का प्रतिशत मात्र **11 प्रतिशत** था। स्थानीय समाज में बालविवाह, बालश्रम जैसी कुरीतियाँ व्याप्त थीं। • गत 27 वर्षों में संस्था से लगभग 22–25000 बालिकाएँ शिक्षा ग्रहण कर चुकी हैं, जिनमे से लगभग 80 प्रतिशत बालिकाएँ आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों से आती थीं। • विद्यापीठ में प्रतिवर्ष अति निर्धन वर्ग की लगभग 25 से 30 बालिकाएँ निःशुल्क अध्ययन करती हैं, इस वर्ग से आने वाले आवेदनों की संख्या प्रतिवर्ष लगभग 80 से 100 तक होती है जिन्हें निःशुल्क शिक्षा प्रदान करना जनजाति महिला विकास संस्थान के समक्ष एक बड़ी चुनौती है। • जनजाति महिला विकास संस्थान की स्थापना के बाद से ले कर आज तक हालाँकि बालिका शिक्षा के प्रतिशत में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है आज सवाईमाधोपुर क्षेत्र में 90.08% पुरुष साक्षरता एवं 67.98% महिला साक्षरता है किंतु महिला साक्षरता का प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र में और भी सोचनीय है। महिला साक्षरता दर पुरुष साक्षरता दर से कम होना इस बात का द्योतक है कि बालिका शिक्षा के क्षेत्र में अभी सतत् एवं क्रांतिकारी प्रयास करने की आवश्यकता है। • संस्थान ने स्कूल शिक्षा तक ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं को खींच लाने की जगह स्कूल शिक्षा को उनके दरवाजे तक पहुँचा कर उसे पिछड़े और किसान परिवारों के लिए सहज और सुलभ बनाने के प्रयास में सफलता पाई है। • अधिकाधिक निर्धन वर्ग की बालिकाओं की निःशुल्क किंतु उत्तम, संस्कार आधारित किंतु वैश्विक और सर्वांगीण विकास का मार्ग दिखाने वाली शिक्षा की व्यवस्था करना जनजाति महिला विकास संस्थान का ध्येय है और यही हमारा परिचय है।

विद्यापीठ निर्माण की नींव डालने में जन सहयोग एवं प्रारंभिक वर्ष–1995

वार्षिक गतिविधि रिपोर्ट

वर्ष 2021–22

- कोविड महामारी के पश्चात परिस्थितियों की समीक्षा।
- कोविड के दौरान बैंक ऑफ बड़ौदा से लिये गए लोन के चुकाने के लिए एक रणनीति बनाना।
- ग्रामीण महिला विद्यापीठ के पास कोई संचित राशि नहीं होने से आने वाली चुनौतियों के लिए सदस्यों की बैठक और विचार विमर्श।
- स्कूल में सरकारी आदेशानुसार SOP लागू करना।
- स्कूल द्वारा कोविड लॉकडाउन के समय ऑनलाइन कक्षाओं की व्यवस्थाओं की समीक्षा।
- ग्रामीण क्षेत्रों में परिवारों के पास स्मार्ट फोन ना होने या इंटरनेट की उपलब्धता ना होने के कारण आई चुनौतियों और इस कारण शिक्षा में आए व्यवधान की क्षतिपूर्ति के लिए अतिरिक्त क्लास की व्यवस्था।
- स्वच्छता पर विशेष ध्यान।
- हैंड वाश स्टेशन बनवा कर संस्था में स्थान स्थान पर लगवाना ।
- मास्क एवं सैनिटाइजर का वितरण।
- हॉस्टल की व्यवस्थाओं में कोविड गाइडलाइन के अनुसार परिवर्तन – बालिकाओं की संख्या प्रति कक्ष में कम करना / लगातार छिड़काव / प्रत्येक दो बिस्तरों के बीच पार्टीशन की व्यवस्था।

ग्रामवासियों द्वारा कैंटीन एवं अभिभावक कक्ष का उद्घाटन–2021

- कोविड में पिता की मृत्यु या अनाथ हुई बालिकाओं की निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था।
- कमेटी का गठन जो गाँव–गाँव जा कर ऐसी बालिकाओं और परिवारों को चिन्हित करे जिनका आर्थिक स्तर कोविड के कारण दयनीय है और उन्हें निःशुल्क अध्ययन के लिए विद्यापीठ लाए।
- बालिकाओं को स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाने की युद्धस्तर पर प्रयास।
- निकटस्थ ग्राम सूरवाल के प्राथमिक चिकित्सा अधिकारी से संपर्क कर बालिकाओं के नियमित स्वास्थ्य जाँच की व्यवस्था।
- स्कूल में कंपाउंडर की नियुक्ति।
- इनफरमरी का निर्माण एवं उसमें दवाइयों की व्यवस्था।
- नए शिक्षकों की भर्ती की विज्ञप्तियाँ निकलवाईं जिनमे विधवा, परित्यकता एवं निर्धन वर्ग को प्राथमिकता।
- हॉस्टल में वार्डन की संख्या बढ़ाई।
- लंबे अंतराल के बाद स्कूल प्रांगण में आई बालिकाओं में ऊर्जा का संचार हो इसलिए विभिन्न गतिविधियों का आयोजन जैसे–वादविवाद प्रतियोगिता, वृक्षारोपण, स्वच्छ परिसर अभियान, ग्रुप डिस्कशन एवं कोविड जागरूकता के लिए रंगोली प्रतियोगिता आदि का आयोजन।
- कोविड पूर्व बनवाए गए एडमिन ब्लॉक, फीस काउंटर, लेखाशाखा एवं समन्वयक चैम्बर में कार्य एवं गतिविधियों के सुचारू क्रियान्वयन की व्यवस्था।
- संस्था अन्तर्गत समन्वय बढ़ाने के लिए हॉस्टल वार्डन और कक्षा अध्यापकों के बीच साप्ताहिक मीटिंग और पढ़ाई में चल रहे विषय एवं टॉपिक्स की जानकारी वार्डन को देना सुनिश्चित करना।
- नियमित साप्ताहिक टेस्ट जिसका संक्षिप्त प्रश्नपत्र एवं एक उत्तरपुस्तिका वार्डन को प्रत्येक शनिवार को दिया जाएगा जिसके आधार पर वो टेस्ट लेंगी।
- नई कार्यकारिणी के गठन के लिए बैठक का आयोजन।
- उर्दू साहित्य विषय की मान्यता लेना।
- जनजाति महिला विकास संस्थान के अन्तर्गत आने वाली समस्त शिक्षण संस्थानों में समन्वयन एवं सुचारू रिपोर्टिंग के लिए समन्वयक पद का गठन कर किसी अनुभवी महिला को नियुक्त करने पर चर्चा।

चुनौतियाँ

- संस्थान के पास कोविड के दौरान कोई फीस, अनुदान या आर्थिक सहायता ना प्राप्त होने से लगभग डेढ़ वर्ष बंद और उपेक्षित पड़ी 25–26 वर्ष पुरानी स्कूल बिल्डिंग का रिपेयर और रखरखाव एक बड़ी चुनौती के रूप में सामने आया।
- हमारी बालिकाएँ आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग से आती हैं। किसी किसी घर में ही स्मार्ट फोन होने के कारण उनके लिए ऑनलाइन पढ़ना सबसे बड़ी चुनौती था अतः उनके लिए व शिक्षकों के लिए इस वर्ष पढ़ाई अत्यंत चुनौतीपूर्ण रही।
- शिक्षकों के लिए कोविड के दौरान वेतन की व्यवस्था अत्यंत चुनौतीपूर्ण रही।
- आय ना होने एवं व्यय बढ़ने के कारण बैंक के लोन का अतिरिक्त भार बढ़ाना पड़ा। ऑनलाइन कक्षाओं के लिए अभिभावक फीस नहीं दे पाए किंतु शिक्षा बाधित ना हो इसका विशेष ध्यान रखा गया। इस विषय में लगातार ऑनलाइन मीटिंग कर, ऑनलाइन कक्षाओं लेने वाले शिक्षकों का एक अलग व्हाट्स ऐप ग्रुप बनाया गया और प्रत्येक कठिनाई को मिल कर सुझावों के आदानप्रदान द्वारा सरल बनाया गया किन्तु संसाधनों का अभाव बहुत बड़ी चुनौती रही। तकनीकी ज्ञान की कमी ने भी कठिनाईयों को बढ़ाया।
- हॉस्टल व कक्षाऐं कोविड़ एस.ओ.पी. के अनुरूप तैयार करने का खर्च संस्था के लिए वहन करना कठिन रहा।

संसाधनों के अभाव की चुनौतियों का सामना आत्मविश्वास और दृढ़ निश्चय के साथ किया

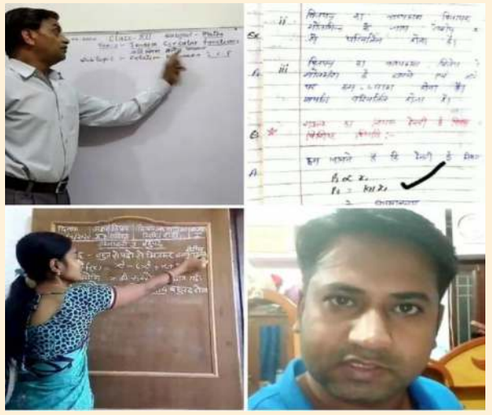

ऑनलाइन कक्षा/यूट्यूब चैनल कक्षाएं

कोविड के दौरान कक्षा रिकॉर्ड कर यूट्यूब चौनल पर अपलोड की

समाधान

- बालिकाओं तक विषयवार ऑनलाइन शिक्षा पहुँचाने के लिए हमने एक यूट्यूब चौनल “GMVEklavya” बनाया और सभी शिक्षकों से पाठ के वीडियोज बना कर उस पर अपलोड करने को कहा गया ताकि छात्राएँ सुविधानुसार उन्हें देख सके।
- बैंक लोन और बढ़ाने पर भी विचार किया।
- शिक्षकों के पास ब्लैकबोर्ड या स्मार्ट बोर्ड एवं वीडियो बनाने के टूल्स का अभाव था जिसके लिए उन्होंने उपलब्ध संसाधनों का बुद्धिमत्ता एवं आत्मविश्वास के साथ उपयोग किया। बोर्ड के स्थान पर घर के दरवाजों पर लिख कर सवाल हल करवाए। संस्था ऐसे शिक्षकों को नमन करती है। हमने मिल कर वीडियो रिकॉर्ड करने के लिए लकड़ी का एक स्टैंड बनाया जिसे ''एकलव्य स्टैंड'' का नाम दिया गया, जिस पर फोन रख नीचे पुस्तक रख कर समझाया जा सके।
- इस दौरान लगातार सभी शिक्षकों से सम्मिलित रूप से वर्चुअल कॉन्फ्रेंसिंग के जरिये संपर्क रखा गया ताकि प्रोत्साहन बना रहे और बालिकाओं की शिक्षा में आने वाली समस्याओं एवं उनके समाधानों पर सम्मिलित चर्चा हो सके।
- स्कूल खुलने के बाद छात्राओं के लिए अतिरिक्त कक्षाओं की व्यवस्था की गई।

कोविड़ वॉरियर्स के योगदान पर आधारित नाटकों का संचालन

जागरूकता रैली

हैंडवाश स्टेशन

कहानी हमारे अपने ‘एकलव्य’ की

जीवन में जब कभी किसी कठिनाई का सामना करना पड़े तो एक ही बात ध्यान में रखनी चाहिए कि हम इसमें अकेले नहीं है। जो समस्याएँ आज समक्ष खड़ी है वो बीते कल में भी थीं, और आने वाले कल में भी रहेंगी।अब प्रश्न यह उठता है की समाधान क्या है ?

बहुत सरल है, जो समाधान बीते कल में सम्भव था वही आज भी सम्भव है। हो सकता है उपाय, विचार या प्रयास का रूप कुछ बदल गया हो पर उसका प्रभाव नहीं बदलता। परिस्थिति बदल जाती है किंतु परिणाम नहीं बदलता।

बीते एक–दो साल में जो सबसे बड़ा सबक मानवता ने सीखा वो है अप्रत्याशित के लिए तैयार रहना। किंतु यह भी सीखा की जहाँ संसाधन होते हैं वहाँ मुकाबला कुछ आसान हो जाता है। तो फिर इस सम्पूर्ण सृष्टि में मनुष्य के अलावा अन्य जीव जन्तु अपने विपत्ति काल के लिए जो प्रबंधन करते है वह संभवतः हम मनुष्यों को उन से सीखने योग्य है। यह तो रही एक बात लेकिन संसाधनों में सबसे सशक्त संसाधन यदि कोई है तो वो बुद्धि बल है जो ईश्वर ने समान रूप से सबको दिया है। इस पर पुनः एक तर्क–वितर्क प्रारम्भ हो सकता है की बुद्धिबल सबका समान कैसे हो सकता है ? किंतु वह सच में समान है। अंतर उसे काम में लेने की इच्छा शक्ति में है ना की बुद्धि की सामर्थ्य में अन्यथा ‘उष्ट्र’ शब्द का सही उच्चारण तक ना कर पाने वाले कालिदास विध्योत्तमा के एक प्रश्न वाक्य ‘अस्ति कश्चित वाग्विशेष?’ के एक एक अक्षर से एक एक महाकाव्य की रचना कैसे कर पाते। यह प्रमाण है इस बात का कि जहाँ चुनौती सामने आती है वहीं मनुष्य की इच्छा शक्ति और उसके प्रयासों की सही परख होती है।

कोरोना महामारी और उसके दौरान शिक्षा व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाना, लगभग सभी शिक्षण संस्थाओ के लिए अब तक की सबसे बड़ी चुनौती है। किंतु ग्रामीण शिक्षण संस्थाओं के लिए यह जितना चुनौतिपूर्ण रहा, उतना सम्भवतः शहरी शिक्षण संस्थाओं के लिए नहीं। और उसका सीधा कारण था डिजिटल संसाधनों का अभाव और साथ में डिजिटल प्लैट्फॉर्म को इस्तेमाल करने का पूर्वानुभव ना होना। यह प्यास लगने पर कुआँ खोदने जैसी परिस्थिति थी।

ग्रामीण महिला विध्यापीठ के लिए यह यात्रा उतार–चढ़ावो वाली रही किंतु इससे हमने जो सीख ली वह हमें भविष्य के प्रति और जागरूक बनाने में सहायक सिध्द होगी यह निश्चित है। प्रारम्भ में हमने जैसे ही ऑनलाइन एजुकेशन के संदर्भ में छात्राओं और अभिभावक गणों से बात की तो ज्ञात हुआ कि ग्रामीण परिवेश से आने वाली बालिकाओं के पास ना तो लैपटॉप और स्मार्ट फोन की व्यवस्था है और ना ही इंटर्नेट की सुविधा। अधिकांश घरों में एक ही फोन है जो भी पिता या भाई के पास ही रहता है और छात्रा को रात्रि के समय उनके घर लौटने पर ही उपलब्ध हो सकता है।इस पर भी केवल कुछ अभिभावक ही बालिकाओं को स्मार्ट फोन और इंटर्नेट उपलब्ध करवाने के लिए सहमत थे, और वे भी स्वयं के सामने ही उन्हें यह सुविधा देने में सहज थे। संस्था और शिक्षकगणों के समक्ष सबसे बड़ा धर्म संकट यह उपस्थित हुआ की हम लगभग नब्बे प्रतिशत विद्यार्थियों को शिक्षा से वंचित रखते हुए बाकी बालिकाओं को पढ़ा कर क्या उन के साथ न्याय कर पा रहे हैं जिनके पास सही समय पर संसाधन उपलब्ध नहीं हैं?

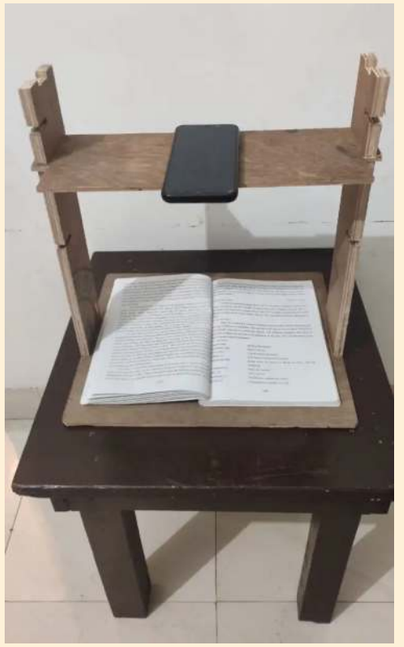

अनगिनत बार वैचारिक मंथन हुआ और सहमति इस पर रही की कुछ नया सोचा जाए। कुछ ऐसा प्रयोग किया जाए की हम हमारी छात्राओं तक शिक्षा की पहुँच बनाए रखने में सफल हो सकें। हमारी मेधावी, सीखने को आतुर छात्राओं में से अधिकांश आदिवासी समाज से आती हैं और ग्रामीण परिवेश में कठिन परिश्रमी परिवारों में पली

बढ़ी हैं।उनमें से कई बालिकाएँ ऐसी भी हैं जिन्होंने बाल विवाह, बाल श्रम, अस्प्रश्यता जैसी समाज में व्याप्त कुरीतियाँ का सामना किया है और उनसे बहादुरी से लोहा ले कर अपनी पढ़ाई को जारी रखा है। इसी पर मंथन करते करते एक दिन हमें आदिवासी कुमार 'एकलव्य' का ध्यान आया तो लगा की हमें उत्तर मिल गया।

गुरु की चरण रज से उनकी मूर्ति बना उसके समक्ष दृढ़ निश्चयी हो कर एकांत में केवल उन्हें देख कर सीखने वाले एकलव्य संभवतः लॉग डिस्टन्स लर्निंग का सबसे पहला उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। यदि ऐसा तब सम्भव था तो आज क्यों नहीं? इस से प्रेरणा पा कर हमने एक YouTube चैनल की स्थापना करने की बात सोची और नाम रखा 'GmvEklavya'।

हमारे अनुभवी शिक्षकों ने पाठ्यक्रम के अनुरूप क्लास रिकॉर्ड करना शुरू कर उन्हें YouTube चौनल पर अपलोड करने की प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी जिसका लिंक वे अभिभावकों के साथ whatsApp ग्रूप्स पर साझा करते थे और उनसे मनुहार करते थे की वे उन बालिकाओं तक भी सूचना पहुँचाएँ जिन के माता पिता ग्रुप्स में जुड़े हुए नहीं हैं ताकि अन्य छात्राएँ भी अपनी सुविधा अनुसार कभी भी उस पाठ को समझ सकें। क्लास रेकर्ड करने की व्यवस्था प्रारम्भ में हमने स्कूल में की किंतु जैसे जैसे कोरोना के संक्रमण में बढ़ोतरी हुई हमारे समस्त अध्यापक अपने अपने घर से ही क्लास रिकॉर्ड करने लगे और इसी के साथ प्रारंभ हुई हमारी दूसरी समस्या।

हमारे सभी शिक्षकों के पास भी इंटर्नेट,कैमरा स्टैंड या ट्राईपोड उपलब्ध नहीं थे फिर भी उन्होंने बहुत से जतन कर और अपनी पारिवारिक परिस्थितियों में भी सामंजस्य बैठा कर पढ़ाना निरंतर जारी रखा। किसी ने पेन कागज पकड़ा तो किसी ने अपने घर के दरवाजे को ब्लैकबोर्ड बना कर उस पर गणित के सवाल हल किए। कभी–कभी पूरी क्लास की रिकॉर्डिंग स्पष्ट भी नहीं हो पाती थी। फिर लगा की क्यूँ ना कोई और जुगत लगाई जाए?

इसी आवश्यकता से आविष्कार हुआ हमारे 'एकलव्य स्टैंड' का। बची हुई लकड़ी के टुकड़ों से हमने एक ऐसा स्टैंड बनाया जिसे कही भी रखा जा सकता है। छोटे से स्थान में रख कर इसके नीचे पुस्तक या नोट्स रखे जा सकते हैं। ऊपर की पट्टी में बने सुराख पर मोबाइल कैमरे का लैंस नीचे की ओर देखता हुआ रख कर किताब भी स्पष्ट दिखाई देती है और साथ ही शिक्षक जो भी बोलते हैं वह सही ढंग से स्पष्ट रेकर्ड हो सकता है। इसकी सहायता से रिकॉर्ड करने में पन्नों को पलटने और कुछ लिख कर समझाने के लिए दोनों हाथ स्वतंत्र रहते हैं जो पढ़ाते समय बहुत आवश्यक है। साथ ही सीधी खड़ी हुई लकड़ी की पट्टियों में बने हुए खाँचे आवश्यकता अनुसार स्टैंड की ऊँचाई को कम या ज्यादा करने में सहायक हैं।एक स्टैंड को बनाने की कुल लागत मात्र सौ से दो सौ रूपये के बीच ही आती है क्यूँकि यह किसी भी व्यर्थ पड़ी लकड़ी या बांस से बनाया जा सकता है। कहने की आवश्यकता नहीं की यह साधारण सा स्टैंड ना केवल हमारा सबसे अच्छा मित्र साबित हुआ परंतु इस के साथ साथ यह हमारे स्वाभिमान और स्वावलम्बन का प्रतीक भी बना ।

इस लेख को पढ़ते हुए यह विचार आना स्वाभाविक है की YouTube चैनल बनाना या ऑनलाइन पठन पाठन सामग्री डालना कोई बड़ी बात नहीं, या आज के दौर में कोई ऐसा पाठ नहीं जो हमें इंटर्नेट के विशाल समुद्र में खोजने पर ना मिले तो ग्रामीण महिला विद्धयापीठ के लिए एक और चैनल बनाना इतना विशेष क्यूँ है?

इसका उत्तर है और बहुत सरल भी है। कोई भी विद्यार्थी जब गुरु के सानिध्य में शिक्षा ग्रहण करता है तो उसका विश्वास अपने गुरुकुल और गुरु पर स्वतः ही आ जाता हो, ऐसा नहीं है। विद्यार्थी को यह विश्वास होना आवश्यक है की उसकी सफलता पर उससे अधिक प्रसन्न उसके शिक्षक गण होंगे और यदि उसे सफलता प्राप्त करने में कठिनाई आती है तो उसके गुरूजन उसका सम्बल बन उसका हौसला बढ़ाने को उसके सम्मुख खड़े मिलेंगे। हमारी बालिकाएं पिछले कई वर्षों से जिन शिक्षकों से पढ़ती आई हैं, उनकी डिजिटल उपस्थिति भी उन में यह आत्मविश्वास जगाने के लिए पर्याप्त है की वे और उनका संस्थान इस चुनौती का सामना करने में कहीं भी किसी से पीछे नहीं है।

हमें यह कहने में संकोच नहीं अपितु गर्व है की हमने और हमारी बालिकाओं ने मिल कर इस समय में कई नवाचार सीखे। अपने रास्ते स्वयं बनाए, अपने सीमित संसाधनों का, अपने बुद्धि बल से भरपूर उपयोग करते हुए हम उन रास्तों पर एक दूसरे का हाथ थाम चले जिन रास्तों की बाधाओं का हमें भान नहीं था। किंतु जैसे–जैसे बाधाएँ आईं हमने उन्हें पार करने के मार्ग स्वयं ढूँढे।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में डिजिटल एजुकेशन पर भविष्य में छोटी कक्षाओं से ही बहुत अधिक ध्यान देने का प्रावधान है और यह निश्चित है की आने वाला समय हर दृष्टि से शिक्षा का स्वर्णिम काल होगा। संसाधन बढ़ेंगे और जो भी माध्यम बहुत कठिन और पहुँच से बाहर लगते थे वे सभी के लिए सुगम और सरल हो जाएँगे किंतु हमारा 'एकलव्य' स्टैंड तब भी हमें गौरवानुभूति करवाता रहेगा।

गतिविधियाँ

कक्षा में अग्रणी आने वाली छात्राओं का सत्कार

सांस्कृति कार्यक्रम

बालिका शिक्षा के प्रति जन जागृति के लिए नाटक

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय द्वारा विद्यापीठ परिसर में विभिन्न जन कल्याण योजनाओं की जानकारी के लिए प्रदर्शनी का आयोजन

परिसर स्वच्छता एवं वृक्षारोपन

कोरोना भगाओ देश बचाओ पोस्टर प्रतियोगिता

कार्यकारिणी की सूची / EXECUTIVE COMMITTEE LIST

(सहकारिता विभाग)

पं. संख्या / REG. NO.- 56/SAWAIMADHOPUR/1993-94 दिनांक / Date 23-06-2021

Sr. No.	Name	Post
1	Jaskaur Meena	Chairman/President
2	Jamwati Chaturvedi	Secretary
3	Rachna Meena	Treasurer
4	Sarswati Amma	Member
5	Riya Sood	Member
6	Malti Sharma	Member
7	Pinky Meena	Member
8	Meera Saini	Member
9	Rajyashree Joshi	Member
10	Chanda Jain	Member
11	Kamala Barwal	Member
12	Sushila Vijay	Member
13	Archana Meena	Member
14	Ishita Kumar	Member
15	Mithi Devi	Member
16	Mithlesh Goyal	Member
17	Sona Kanwar	Member
18	Sushma Sharma	Member
19	Preeti Mahawar	Member
20	Neelam Kumari	Member
21	Rekha Mangal	Member
22	Kailashi Bai	Member
23	Ritasingh	Member
24	Vimlesh Jangid	Member
25	Phoolwati Meena	Member
26	Neha Jain	Member

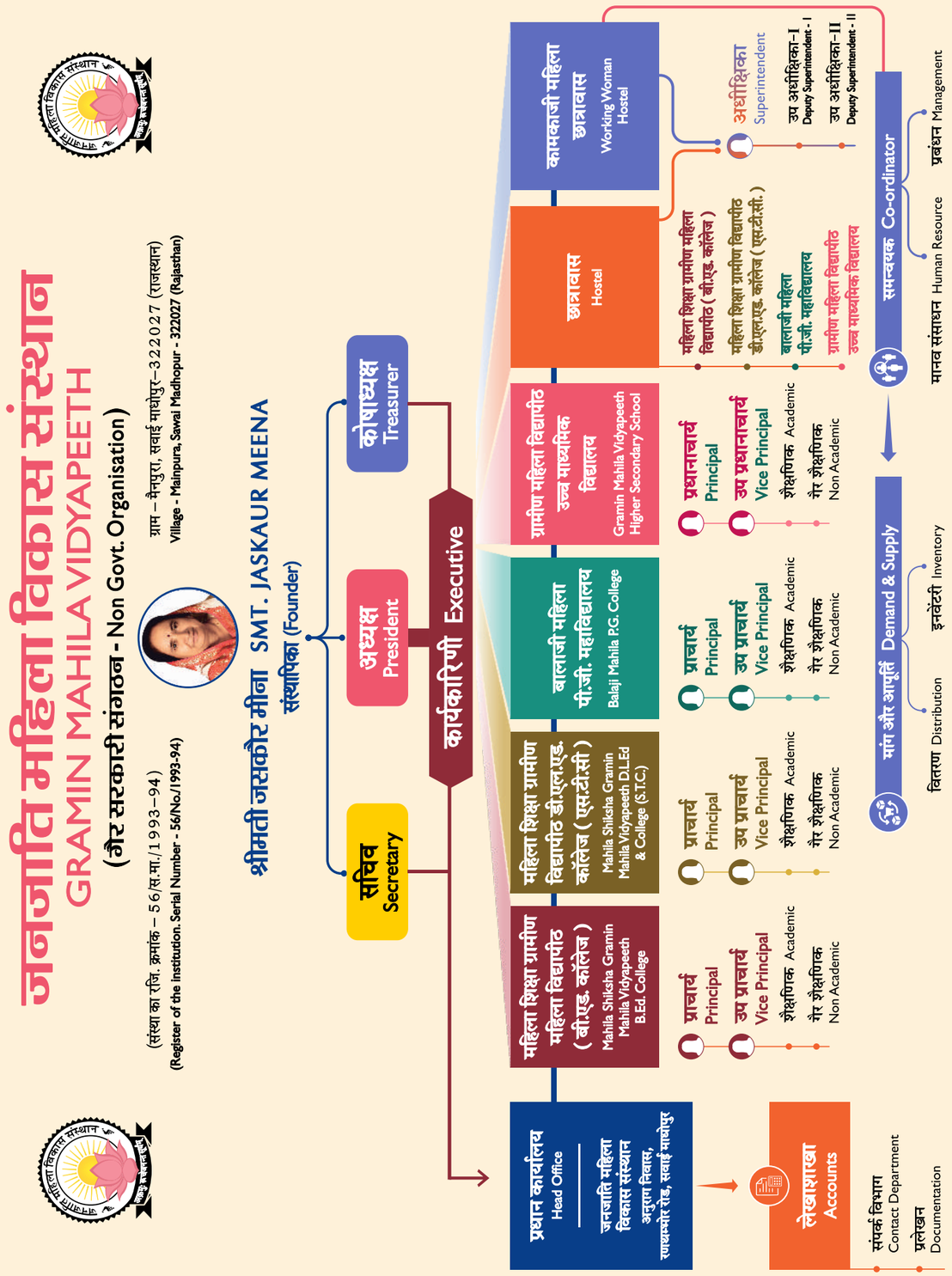

संगठनात्मक संरचना

ग्रामीण महिला विद्यापीठ

वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

कक्षा- 10 वीं (2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	कृष्णा मीना		92.17
2	गिरजा मीना		89.50
3	राधा मीना		88.67

कक्षा- 12 वीं (विज्ञान वर्ग 2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	आरती मीना	श्री शंकर लाल मीना	84.00
2	विजय श्री मीना	श्री प्रभाती लाल मीना	83.40
3	प्रियंका मीना	श्री मीठा लाल मीना	80.80

कक्षा- 12 वीं (कला वर्ग 2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	कुमकुम मीना		94.00
2	ज्योति मीना		89.40
3	प्रियंका गुर्जर		89.40
4	निकिता मीना		87.60
5	रानी मीना		85.40

59 बालिकाओं में से 47 प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुईं, 11 ने द्वितीय श्रेणी एवं 1 तृतीय श्रेणी प्राप्त की

खेलकूद, सांस्कृतिक, सामाजिक एवं अन्य वार्षिक गतिविधियाँ

निबन्ध प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
रामधणी मीना	टीकाराम मीना	X	प्रकृति सदन	प्रथम स्थान
माही मीना	उमेश मीना	VIII	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
विदुषी पटोना	कमलेश पटोना	VI	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

पत्र लेखन

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
गोरन्ता मीना	नन्दपाल मीना	IX	प्रभात सदन	प्रथम स्थान
विजयश्री	प्रभाती लाल मीना	XII	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
घड़ी बैरवा	दयाराम बैरवा	XI	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

कविता लेखन

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
अल्का मीना	सुरेश मीना	XI	प्रकृति सदन	प्रथम स्थान
वनिषा मीना	रामधन मीना	XI	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
भागन्ती मीना	मोलेश मीना	X	प्रभात सदन	तृतीय स्थान

केरम प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
सुमन मीना	देशराज	VI	प्रभात सदन	प्रथम स्थान
मुस्कान	राजूलाल	VII	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
प्रिया ढोली	सोनू प्रकाश	VIII	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

कबडडी प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
विजय लक्ष्मी, अक्षिता पूजा, पायल, आरती, निरमा			प्रयास सदन	प्रथम स्थान

जलेबी कूद

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
छवि गुर्जर		VII	प्रयास सदन	प्रथम स्थान
कोमल मीना	रूकमकेश मीना	VII	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
निशा मीना	हरिराम	VI	प्रक्रति सदन	तृतीय स्थान

खो-खो

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
पायल, पूजा, चित्रांशा, हर्षिता, अनुष्का, आशा, कविता			प्रक्रति सदन	प्रथम स्थान

चम्मच दौड़

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
काजल मीना	आशाराम	VI	प्रकाश सदन	प्रथम स्थान
माया गुर्जर	अंतर सिंह	VII	प्रभात सदन	द्वितीय स्थान
नीलम	भीम सैन	VIII	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

मित्र दौड़

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
ज्योत्सना मीना कीर्ति मीना	अजय कुमार अशोक	VIII VIII	प्रकाश सदन	प्रथम स्थान
अर्चना मीना प्रिया ढोली	रामराज ओम प्रकाश	VIII VIII	प्रक्रति सदन	द्वितीय स्थान
मीनाक्षी मीना प्रीति मीना	बोलतीराम जगदीश	VIII VIII	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

टेबल टेनिस प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
पलक	उमेश मीना	IX	प्रकृति सदन	प्रथम स्थान
हर्षिता पटोन		IX	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
रूचि मोरदिया	रामसहाय	IX	प्रयास सदन	तृतीय स्थान

कबडडी प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
आशा, रामघनी, सफेदी, रूचि, गोलमा			प्रयास सदन	प्रथम स्थान

जिला स्तर प्रतियोगिता

जिले में ग्रामीण महिला विद्यापीठ में प्रथम स्थान प्राप्त किया

टेबल टेनिस प्रतियोगिता

विजेता का नाम	पिता का नाम	कक्षा	सदन	स्थान
पलक मीना	उमेश मीना	IX	प्रकृति सदन	प्रथम स्थान
हर्षिता पटोन	कमलेश पटोन	IX	प्रकाश सदन	द्वितीय स्थान
रूचि कुमारी मोरदिया	आनन्द प्रकाश	IX	प्रयास सदन	तृतीय स्थान
मनसोभा मीना	रामसहाय	IX	प्रयास सदन	चतुर्थ स्थान

इस वर्ष संस्था में बालिकाओं की कुल संख्या

संस्था का नाम	छात्राओं की संख्या / वर्ष 2022
ग्रामीण महिला विद्यापीठ	323
बालाजी महिला पी.जी. महाविद्यालय	318
महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ बी.एड़. कॉलेज	95
महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ डी.एल.एड़. कॉलेज	100
छात्रावास	172
कामकाजी महिला छात्रावास	0

बालाजी महिला पी. जी. महाविद्यालय

वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

M.A. हिन्दी

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	
1	जसकौर मीना	ओम प्रकाश मीना	

M.A. भूगोल

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	
1	आरती मीना	रामनिवास मीना	

B.A. तृतीय वर्ष

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	
1	कविता मीना	रामवतार मीना	

काली बाई भील स्कूटी योजना पुरस्कार

नाम

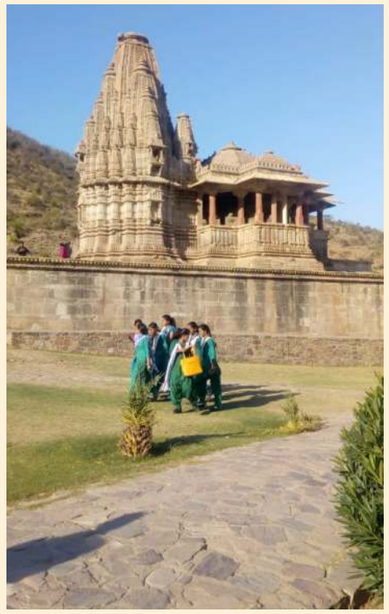

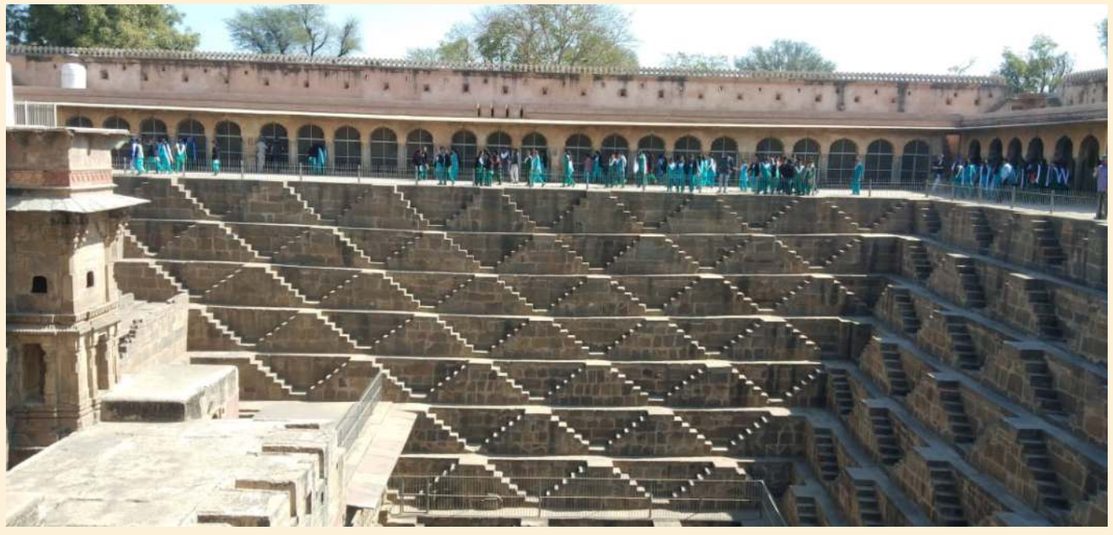

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ बी.एड़. कॉलेज

वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

बी. एड. प्रथम वर्ष (2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	आंकाक्षा खण्डेलवाल	श्री दिनेश कुमार गुप्ता	89.42
2	दीप्ती अग्रवाल	श्री दिनेश चन्द मित्तल	89.41
3	हेमलता मीना	श्री कजोड़मल मीना	88.28

बी. एड. द्वितीय वर्ष ((2021-2022))

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	दिव्या कुमारी	श्री अजीत कुमार	89.92
2	शिवानी मीना	श्री रोशन लाल	82.00
3	मंजूलता मीना	श्री पुखराज मीना	81.57

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ डी.एल.एड़. कॉलेज

वार्षिक परिणाम रिपोर्ट

बी.एस.टी.सी. प्रथम वर्ष (2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	कमला कुमारी	श्री हेमा राम	85.80
2	सिलोचना	श्री मणिराम	85.70
3	तनीषा सोनी	श्री ओमप्रकाश सोनी	85.40

बी.एस.टी.सी. द्वितीय वर्ष (2021-2022)

क्र.सं.	छात्रा का नाम	पिता का नाम	प्रतिशत
1	नेकी द्विवेदी	श्री आलोक द्विवेदी	86.54
2	शिमला बाई मीना	श्री सीताराम मीना	85.70
3	रेखा कँवर	श्री भँवर सिंह	85.41

एडमिन ब्लॉक

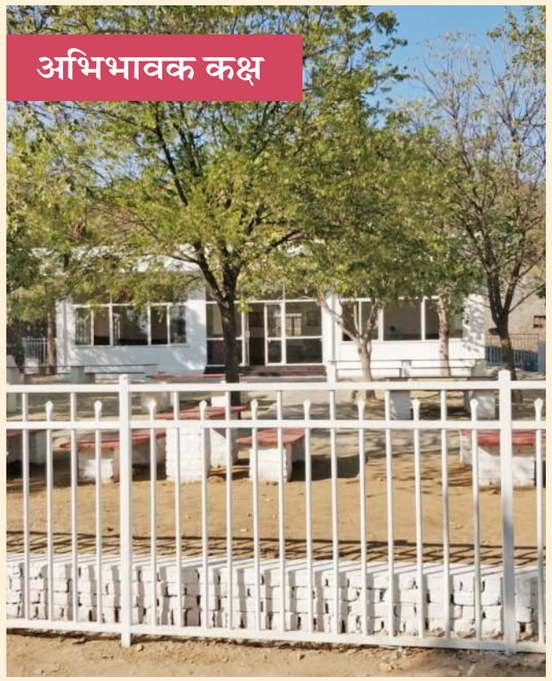

अभिभावक कक्ष

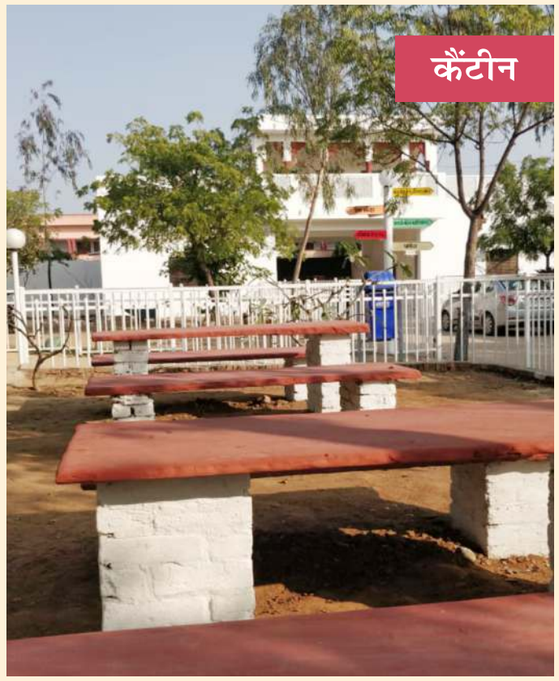

कैंटीन

भोजन कक्ष

पुस्तक विमोचन

वर्ष 2020 हमारी संस्थापिका श्रीमती जसकौर मीना जी के प्रेरणादायी जीवन और बालिका शिक्षा एवं महिला सशक्तिकरण की दिशा में किए गए उनके अथक प्रयासों पर उनकी पुत्री एवं संस्थान की निदेशक रचना मीना द्वारा लिखी गई जीवनी "अविरल धारा"का प्रकाशन माननीय लोकसभा के सभापति श्री ओम बिरला जी के हाथों हुआ।

यह प्रकाशन संस्थान के लिए गौरव का क्षण था जो इस वर्ष की हमारी प्रमुख उपलब्धियों में से एक है।

हमारे ध्येय एवं उसकी प्राप्ति के लिये यह नवीन ऊर्जा का संचार करने वाली जीवनी है जिसको अपार प्रशंसा एवं प्रेम प्राप्त हुआ।

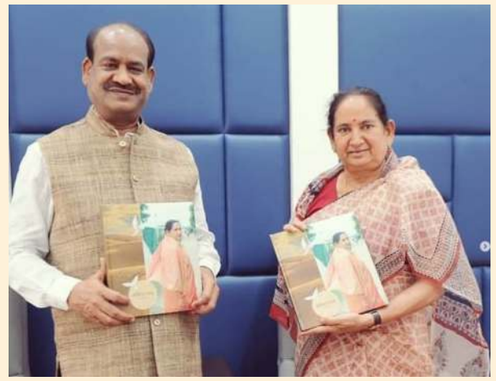

"जीवनी की लेखिका एवं संस्थान की निदेशक श्रीमती रचना मीना "दादाजी" श्री श्रीलाल जी मीना एवं "माँ" संस्थापिका श्रीमती जसकौर मीना जी के साथ "

ग्रामीण महिला विद्यापीठ
उच्च माध्यमिक विद्यालय

बालाजी महिला पी.जी.
महाविद्यालय (बी.ए.)

बालाजी महिला पी.जी.
महाविद्यालय (एम.ए.)

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ
बी.एड. कॉलेज

महिला शिक्षा ग्रामीण विद्यापीठ
डी.एल.एड. (एस.टी. सी.) कॉलेज

छात्रावास परिधान

पिछले वर्ष की अप्रत्याशित चुनौतियों के बाद इस साल एक बार फिर विद्यालय का प्रांगण बालिकाओं के स्वरों से गुंजायमान हो उठा। लगा जैसे दो वर्षों की उदासी एवं अवसाद की छाया पूरी तरह हट गई हो। नन्हीं बेटियों की मुस्कुराहट से पूरा विद्यापीठ परिसर महक गया।

चुनौती कितनी ही बड़ी क्यों ना हो, मानवता सम्मिलित प्रयासों से उसे अंत में हरा ही देती है।

कुछ अत्यंत दुखद अनुभवों का सामना करना पड़ा जब कई पूर्व बालिकाओं के लगातार अनुपस्थित रहने से उनके घर संपर्क किया और पता चला कि उनके पिता या माता में से किसी एक की और कहीं–कहीं दोनों की कोविड काल में मृत्यु हो जाने पर वे आगे पढ़ने में असमर्थ हैं।

विद्यापीठ परिसर में आज तक कोई बालिका इस कारण शिक्षा से वंचित नहीं रही, कि वह फीस नहीं दे सकती अतः हमने ऐसी अनाथ बालिकाओं की निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था की।

उनकी किताबें, यूनिफार्म आदि की व्यवस्था की गई और सुनिश्चित किया कि वह अपनी पढ़ाई निरन्तर जारी रखे।

संस्थापिका की कलम से...

आदरणीय बंधु,

मनुष्य पुरातन परम्परा प्रिय है, अनुकरणशील है, किन्तु यदि वह नया पग उठाये तो अपने अन्तर से ही नया सूर्य पैदा कर सकता है, अनुगामी न बनकर अग्रणी बनने की क्षमता रखता है, वह भाव ऋग्वेद के इस श्लोक से और स्पष्ट हो जाते है।

''अनुप्रत्नाश आयवः पदं नवीयो। अक्रमुःरूचेजनन्त सूर्यम्।।''

बालिका शिक्षा के विस्तार का लक्ष्य मेरे जीवन का संकल्प है।
भारतीय संस्कृति की रक्षार्थ, अज्ञान के विरूद्ध इस संघर्ष में, ज्ञान का कवच धारण करने हेतु विद्यालय संचालन में सर्व समाज का सहयोग अपेक्षित है।

अभिनन्दन एवं धन्यवाद

संस्थापिका
जसकौर मीणा

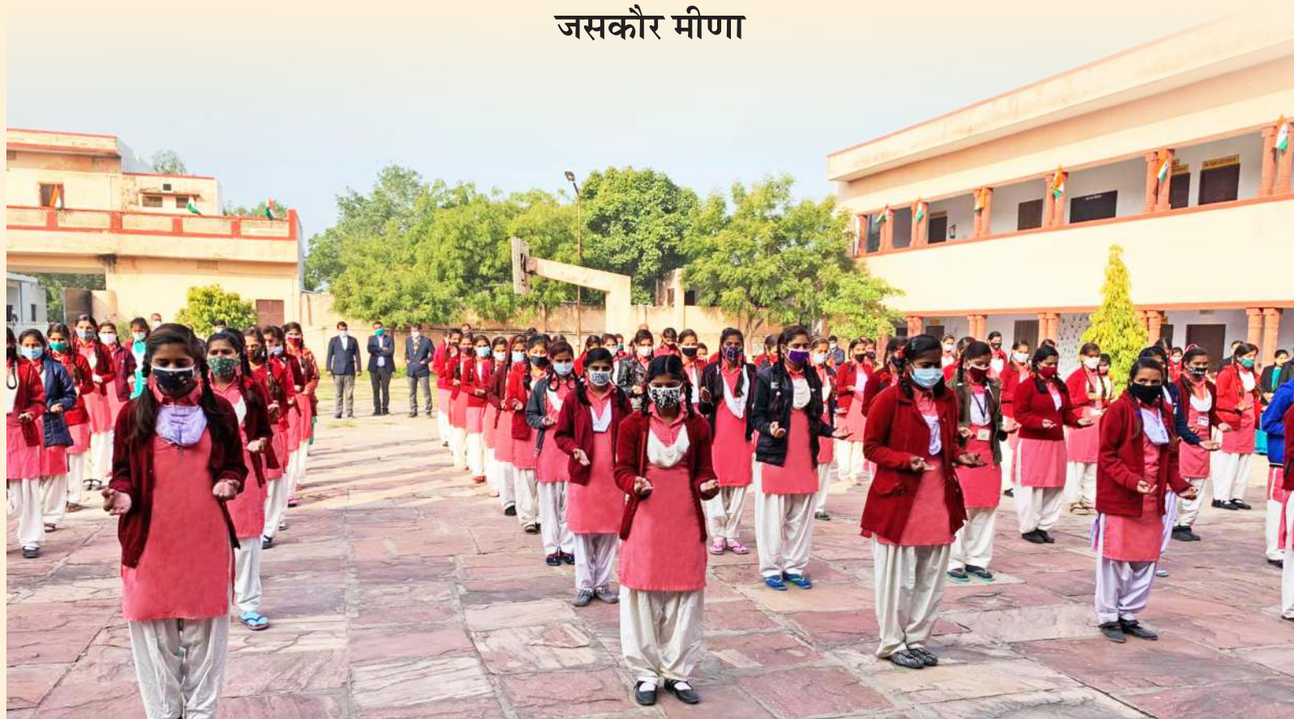

संस्था के मुख्य दूरभाष नम्बर

- निदेशक कार्यालय – 9461462222
- **बालाजी महिला पी.जी. महाविद्यालय**
  प्राचार्य – मो. 97851 21277
  फोन – 07462-253044
- **ग्रामीण महिला विद्यापीठ उच्च माध्यमिक विद्यालय**
  प्राधानाचार्य – मो. 98876 41704
  फोन – 07462-253009

ऑफिस व लेखाशाखा के मुख्य दूरभाष नम्बर

- लेखाकार – मो. 9460950825
- लेखा शाखा – मो. 94609 50825
- मुख्य समन्वयक – मो. 88009 25249
- छात्रावास अधीक्षक – मो. 6376798503

"Look closely at the present you are constructing :
it should look like the future you are dreaming."

- Alice Walker

ग्राम – मैनपुरा, सवाई माधोपुर-322027 (राजस्थान)

gmvswm@gmail.com | facebook.com/GMVswm
www.gmvswm.com | instagram.com/gmvswm